एक दलित छात्र की आत्महत्या

बेचैन करते सवाल

सागर तिवारी

30 अगस्त, 2002 का दिन दिल्ली विश्वविद्यालय के सबसे प्रतिष्ठित कालेजों में से एक हिन्दू कॉलेज के रुतबे पर एक ऐसा धब्बा लगा गया जिसे मिटा पाना शायद मुमकिन न हो। हिन्दू कॉलेज के बी.ए. (ऑनर्स) अंग्रेजी, प्रथम वर्ष के एक दलित छात्र ने सल्फास की गोलियां खा लीं। यह सनसनीखेज घटना अंग्रेजियत के ढांचे में ढले, औपनिवेशिक मानसिकता और दिमागी गुलामी के शिकार अंग्रेजी विभाग के अध्यापकों द्वारा उस छात्र के कथित अपमान और मानसिक उत्पीड़न का नतीजा थी।

कृतु शास्त्री नामक उस छात्र के पिता स्कूल के एक साधारण संस्कृत अध्यापक थे। साढ़े सत्रह वर्ष का कृतु अपने घर का बड़ा लड़का था और उसके साथ उसके परिवार की बहुत सी आशाएं बंधी थीं। इन्हीं आशाओं को पूरा करने के लिए उसने देशभर में विख्यात हिन्दू कॉलेज के अंग्रेजी विभाग में प्रवेश लिया। उसकी यह हसरत थी कि वह अंग्रेजी में अध्यापन कार्य करें। बारहवीं तक एक सरकारी स्कूल में शिक्षा ग्रहण करने के बाद आरक्षण कोटे से कृतु को हिन्दू कॉलेज में प्रवेश मिला।

यह नौजवान खेल-कूद, वाद-विवाद जैसी गतिविधियों में भी आगे रहता था। उसकी कमी यह थी कि वह सरकारी स्कूल से पढ़ा होने के कारण वह महंगे कान्वेंट स्कूलों में सिखाई जाने वाली चोंचलेबाजी नहीं जानता था। रईसों के सकूलों में न पढ़ा होने के कारण वह धारा प्रवाह अंग्रेजी नहीं बोल सकता था। उसने तो एक ऐसी दुनिया में प्रवेश किया था जो अभी उसके लिए बिल्कुल नई और अनजानी थी। वह तो इस दुनिया में एक सीधा-सादा लड़का था। उसके रंग-ढंग और पहनावे से उसकी यह कमी और भी ज्यादा "खटकने" वाली हो गयी। निम्न मध्यवर्गीय पृष्ठभूमि के कारण उसका पहनावा एकदम साधारण था। कॉलेज शुरू होने पर शुरू हुआ अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापकों द्वारा उसके अपमान का सिलसिला। अंग्रेजी के अध्यापकों ने उसे यह कहना शुरू कर दिया कि अंग्रेजी पढ़ना उसके बूते की बात नहीं है और उसे विषय बदल लेना चाहिए। उसका इन अध्यापकों ने अकेले में और पूरे क्लास के सामने लगातार अपमान किया। इस मानसिक उत्पीड़न के बारे में कृतु ने अपने पिता और दोस्तों से बात की। उसके पिता ने कृतु की मानसिक स्थिति के मद्देनजर उसे अपना कोर्स बदल लेने को कहा। कृतु ने भी इस तनाव और यातना से मुक्ति के लिए यह सलाह मान ली। वह अपनी अर्जी लेकर कॉलेज अथॉरिटी के पास गया। लेकिन उसे बताया गया कि विषय बदलने का समय बीत चुका है। उसकी तमाम कोशिशों के बावजूद विषय नहीं बदल सका और उसके अपमान का सिलसिला जारी रहा।

पिता के कहने पर दिल्ली नगर निगम के स्कूलों में अध्यापन के लिए जरूरी 'डायट' (DIET) की परीक्षा दी। लेकिन इस बीच हिन्दू कॉलेज में अंग्रेजी विभाग के फ्रेशर्स वेलकम समारोह में सार्वजनिक रूप से कृतु का उसके अध्यापकों द्वारा अपमान किया गया। इस घोर अपमान से उसकी मानसिक स्थिति बहुत तनावपूर्ण हो गई। लेकिन उसके अपमानों का सिलसिला अभी खत्म नहीं हुआ था। 29 अगस्त, 2002 को रोहिणी स्थित उसके विद्यालय के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में कृतु को सम्मानित किया जाना था। वह बेहद खुश होकर सजा-धजा स्कूल पहुंचा और खुश क्यों न होता, अपमानों के इस सिलसिले के बाद उसे कहीं सार्वजनिक रूप से सम्मान जो प्राप्त होने वाला था। लेकिन कृतु के एक गरीब दलित होने की पहचान ने यहां भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। उसे मंच पर बुलाया ही नहीं गया। इस घटना ने कृतु को अंदर से तोड़ दिया। घर लौटने के बाद वह रात भर बेचैन रहा और अगले दिन उसने सल्फास की गोलियां खाकर अपनी इहलीला समाप्त कर ली।

इस तरह एक और जीवन इस सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था और दि.वि.वि. के हिन्दू कॉलेज जैसी शैक्षणिक संस्थाओं की कुलीनवादी संस्कृति और सामाजिक डार्विनवादी माहौल का शिकार बन गया। जाहिरा तौर पर दलित होने के कारण कृतु को हर पल हर कदम पर जिल्लत का सामना करना पड़ा। हिन्दू कॉलेज जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं में अंग्रेजियत का चोगा ओढ़े तमाम ऐसे अध्यापक हैं जिनकी आधुनिक चमड़ी के नीचे जातिवादी, यथास्थितिवादी और प्रतिक्रियावादी मध्ययुगीन जानवर बैठा है। लेकिन यह भी उतना ही बड़ा सच है कि अगर कृतु एक अमीर दलित होता तो शायद उसे इतने अपमान का सामना नहीं करना पड़ता। अपमान उसे इस कदर तोड़ नहीं सकते थे कि वह आत्महत्या कर ले, क्योंकि उसके पीछे अपने आर्थिक पृष्ठभूमि की शक्ति खड़ी होती, जिसके बल पर वह अपने भविष्य की एक तस्वीर बना सकता था। इसके अलावा अगर वह एक कान्वेंट एजुकेटेड दलित होता तो भी उसका यह त्रासद अन्त नहीं होता। इसलिए यह बात सोचने वाली है कि कृतु की कहानी क्या महज जातिगत उत्पीड़न की कहानी है या कि यह आज के भारतीय समाज में अमीर और गरीब वर्गों के बीच लगातार बढ़ती खाई को दिखलाता है या कि यह विश्वविद्यालयों के अंग्रेजियत भरे माहौल में पनपती औपनिवेशक मानसिकता को भी बेनकाब करती है, या कि यह आज के समाज में *'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट'* और *'विनरटेक्स ऑल'* के पूंजीवादी दर्शन की पहुंच को भी दर्शाता है।

आज यह हम सबके सोचने का मुद्दा है कि जातिगत समानता की लड़ाई को क्या व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई से काटकर लड़ा जा सकता है? क्या दलित मुक्ति की लड़ाई को कानूनी और संवैधानिक लड़ाई से किसी मुकाम तक पहुंचाया जा सकता है? क्या संसद में दलितों के चले जाने से दलित शोषण-उत्पीड़न से मुक्त हो सकते हैं?

जी हां, कृतु जैसे लड़कों का भविष्य भी इन्हीं सवालों के समाधान में छिपा हैं। दलित राजनीति का चरम रूप से पतित अवसरवाद, थके-हारे क्रांतिकारियों द्वारा दलितों के तुष्टीकरण की अवसरवादी राजनीति से कोई आशा करना निरी मूर्खता ही होगी। समय की मांग यह है कि इस पूरे सामाजिक' आर्थिक ढांचे का एक सच्चा क्रांतिकारी विकल्प खड़ा किया जाय। ऐसा विकल्प ही दलित मुक्ति की लड़ाई को सही ढंग से लड़ सकता है। बहरहाल, फौरी तकाज़ा यह है कि कृतु शास्त्री के मामले की निष्पक्ष न्यायिक जांच कराई जाय और दोषियों को उचित सजा दी जाय। इसके लिए तमाम संगठन कुलपति और विश्वविद्यालय प्रशासन पर दबाव डाल रहे हैं। सरोकार रखने वाले तमाम व्यक्तियों ने इस मांग का समर्थन करते हुए अपने हस्ताक्षर कुलपति को सौंपे हैं लेकिन विश्वविद्यालय प्रशासन और कॉलेज प्रशासन ने इस मामले में बेहद असंवेदनशील रुख अपनाया है। कोई कदम उठाना तो दूर इस मामले को रफा-दफा करने की पुरजोर कोशिशें की जा रही हैं। इस मामले को इस कदर दबाया जा रहा है कि हिन्दू कॉलेज के ही कई छात्र-छात्राओं को इसकी जानकारी तक नहीं है। ●